2 नवम्बर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 15 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महावीर निर्वाणोत्सव संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 19 अक्टूबर को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: नित्य-नियम पूजन के उपरान्त पंचतीर्थ जिनालय में एवं सीमंधर जिनालय में निर्वाण श्रीफल समर्पित किया गया। तत्पश्चात् पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा 'तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। साथ ही गुरुदेवश्री का मांगलिक प्रवचन एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का दीपावली विषय पर वीडियो प्रवचन भी आयोजित हुआ। सभी कार्यक्रम पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये। **- जिनकुमार शास्त्री**

(2) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में दिनांक 16 से 20 अक्टूबर 2017 तक महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर व्याख्यानमाला एवं प्रवचनसार मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार मंडल विधान पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित शैलेषभाई तलोद आदि के व्याख्यानों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित दीपकजी भोपाल द्वारा किये गये।

विशेष प्रवचनों का लाभ मिला

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 27 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री बण्ड द्वारा विशेष प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रात: चौंसठ ऋद्धि एवं कायोत्सर्ग विषय पर एवं रात्रि में समयसार के कर्त्ताकर्माधिकार पर प्रवचनों का लाभ मिला, जिसका महाविद्यालय के छात्रों एवं स्थानीय साधर्मियों ने उत्साहपूर्वक लाभ लिया।

भूल सुधार

विगत 17 अक्टूबर के अंक में प्रकाशित जैनतिथिदर्पण में प्रशिक्षण शिविर दिनांक **20 मई से 6 जून** 2018 तक पढा जाये।

पंचकल्याणक पत्रिका का विमोचन संपन्न

कोटा (राज.) : झालावाड़ में दिनांक 14 से 19 नवम्बर तक होने वाले पंचकल्याणक की पत्रिका का विमोचन कार्यक्रम मुमुक्षु आश्रम में दिनांक 15 अक्टूबर को संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सम्मेदशिखर विधान का आयोजन किया गया। विधान आमंत्रणकर्त्ता श्री सुरेन्द्रजी (राहुल ट्रांसफार्मर परिवार) कोटा एवं मंगल कलश स्थापनाकर्ता श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटा रहे।

इस अवसर पर पत्रिका का विमोचन श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं समस्त अतिथि विद्वत्जनों द्वारा किया गया एवं पत्रिका लेखन-विधि श्री विजयजी बड़जात्या और श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर द्वारा की गई। सभा का संचालन पण्डित रतनजी शास्त्री कोटा एवं नागेशजी पिड़ावा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. किरणजी शाह पुणे, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, श्री दिलीपजी सेठी, श्री शैलेन्द्रजी चांदवाड़ आदि महानुभाव एवं झालरापाटन, झालावाड़ व कोटा के सभी स्थानीय विद्वान भी उपस्थित थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ द्वारा कराया गया।

स्मृति दिवस समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 24 अक्टूबर (कार्तिक शुक्ल पंचमी) को आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की स्मृति में एक समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि पण्डित टोडरमलजी प्रतिभा संपन्न एवं प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म को जीवन्त रखा एवं महत्व दिया। साथ ही डॉ. भारिल्ल ने पण्डित टोडरमलजी की आयु एवं मृत्यु के संदर्भ में अनेक रोचक तथ्य भी बताये। इसके अतिरिक्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' ने भी पण्डित टोडरमलजी के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंगलाचरण वीकेश जैन खड़ैरी एवं रजत जैन कापरेन ने किया तथा शुभांशु जैन कोटा ने स्वरचित कविता का वाचन किया। संचालन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

सम्पादकीय –

मेरी जीवन यात्रा के कुछ प्रेरक प्रसंग

1

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

ज्यों-ज्यों मैं अपने बाल्यकाल पर दृष्टिपात करता हूँ, बचपन के दिनों को याद करता हूँ, त्यों-त्यों मेरी क्रमबद्धपर्याय के सिद्धांत की श्रद्धा अचल की भांति निश्चल होती जाती है। कार्य-कारण की सहज स्वाभाविक परिणति के संदर्भ में जब अपने जीवन का निरीक्षण करता हूँ तो एक-एक घटना के निष्पन्न होने में पाँचों समवाय बिना मिलाये स्वत: कैसे मिलते गये – यह सोच-सोचकर जैनदर्शन के वस्तु-स्वातंत्र्य की श्रद्धा भी दृढ होती जाती है और अपने कर्तृत्व का अहंकार तत्त्वज्ञानरूपी सूर्य की ऊष्णता से घी की भाँति पिघलकर बहता प्रतीत होता है।

मेरा जन्म जिस साधन विहीन छोटे से ग्राम में और जिन प्रतिकूल परिस्थितियों में हुआ था, उन परिस्थितियों में नवजात बच्चों के बचने का प्रतिशत पचास से भी कम रहता था। हम स्वयं अपनी माँ से नौ भाई-बहिन हुये थे, उनमें केवल चार भाई-बहिन ही जीवित रहे। मृत्यु के निमित्तों की ओर से देखें तो हमारी मृत्यु के निमित्तों की भी कोई कमी नहीं थी, यदि हम बचे रहे तो इसमें हमारी उपादान की योग्यता, होनहार और आयुकर्म की प्रबलता ही प्रधान कारण रहे। इस संदर्भ में समयसार के बंध अधिकार की गाथाएं याद आती हैं, जिसमें कहा गया है कि –

निज आयु क्षय से मरण हो यह बात जिनवर ने कही।
तुम मार कैसे सकोगे, जब आयु हर सकते नहीं।।

मेरी मृत्यु के प्रबल निमित्तों के संदर्भ में मेरी माँ ने मुझे एक दिन बताया कि जब मैं लगभग 3 वर्ष का था तब एक दिन शासकीय चिकित्सालय के कर्मचारी चिकनपॉक्स (बड़ी चेचक) निवारण के टीके लगाने गाँव में आये थे; क्योंकि उन दिनों चेचक का प्रकोप चल रहा था। अत: शासन की ओर से यह व्यवस्था थी; परन्तु सारा गाँव उन टीकों से डरा हुआ था। कर्मचारी बालकों को बलात् टीका लगाते थे, जैसे ही वे लोग टीका लगाकर मुँह फेरते कि बालकों के माँ-बाप उन टीकों के घावों को गोबर से पोंछ डालते थे। संभव है किसी अनजान जानबुझक्कड़ ने टीकों के पकने के बचाव के रूप में यह उपाय बता दिया हो; उन्हें यह मालूम नहीं था कि गोबर में तो भयंकर प्राणघातक कीटाणु होते हैं। ऐसा हुआ भी; अनेक बालक-बालिकाएं काल कवलित हो गये।

माँ ने बताया कि मुझे भी टीका लगाया गया था, जिसके मेरे बायें हाथ में अभी भी निशान हैं। माँ ने मेरे टीके भी गोबर से पोंछे थे; पर मेरी आयु शेष थी सो बच तो गया; परन्तु पोंछ देने से चेचक निवारण करने का दवा का असर समाप्त हो गया और कुछ दिन बाद ही भयंकर चिकनपॉक्स का आक्रमण हो गया, जिससे तेज बुखार के साथ शरीर में बड़े-बड़े फफोले पड़ गये, चेहरा सूझ गया और लाल-लाल हो गया, चेहरे पर भी फफोले पड़ गये, उन फफोलों के निशान अभी भी हैं, आँखें बंद हो गयी। महीनों तक आँखें नहीं खुली; मरते-मरते आखिर बच ही गया। गाँव में चेचक का कोई इलाज नहीं था, कोई परहेज भी नहीं था, मात्र भवानी देवी को जल चढवा देना ही एकमात्र इलाज था उस गाँव में। होनहार भली थी, मनुष्य भव मुफ्त नहीं जाना था सो बचा रहा। हो सकता है आँखों से कम दिखने लगने में इसी घटना का योगदान हो। यह घटना भी होनहार और वस्तु के स्वतंत्र परिणमन को तथा निमित्तों की अकिंचित्करता को ही सिद्ध करती है।

ऐसी ही एक बात और भी जानने योग्य है। गाँव में यह तो कोई जानता ही नहीं था कि एलर्जी से भी बिमारियाँ होती हैं। मुझे अभी भी धूल और धूप से एलर्जी है, एलर्जी का इलाज केवल उस वस्तु से बचना ही है, जिससे एलर्जी होती है। मुझे धूल से जुकाम-खाँसी और धूप से मस्तिष्क पीड़ा हो जाती है। यह तकलीफ बचपन में भी थी। दिन-रात धूल और धूप में रहने के प्रसंग बने रहते थे। कभी किसी को ऐसी एलर्जी भी हो सकती है जो मौत का कारण बने; परन्तु जब तक जिसकी आयु शेष है, तब तक अकेले बाह्य कारणों से कुछ नहीं होता। यही कारण है कि मैं लगातार सर्दी-जुकाम और सिरदर्द सहता हुआ जीवित रहा।

यद्यपि हम छोटे से ऐसे गाँव में जन्मे, जहाँ न लौकिक उन्नति के साधन थे और न पारलौकिक उन्नति के; परन्तु हमारी भली होनहार थी, इसकारण पिताजी के कहे अनुसार उन्होंने हमारे जन्म लेने के पहले ही यह संकल्प कर लिया था कि यदि मेरे पुत्र हुये तो मैं उन्हें जैनदर्शन का विद्वान बनाऊँगा। यह प्रेरणा उन्हें एक पंचकल्याणक में विद्वान पण्डितजी के प्रभावी प्रवचन सुनकर मिली थी। तदनुसार उन्होंने हमें विद्वान बनाने के प्रयास भी किये। उनकी भावना सफल हुई, इसका उन्हें भारी हर्ष था और वे इस संकल्प को समय-समय पर बड़े गौरव के साथ दुहराया करते थे।

इन सब घटनाओं से मैंने अनुभव किया कि इसमें अनुकूल

निमित्त और स्वयं का पुरुषार्थ तो कार्यकारी है ही, तदनुसार होनहार, काललब्धि और स्वभाव - इस तरह पाँचों समवाय (कारण) सहज ही कार्य के अनुसार मिल ही जाते हैं। इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

इन घटनाओं के संदर्भ में जब जैनदर्शन के मौलिक सिद्धांतों को श्रद्धा से देखते हैं तो किसी भी संयोग पर दोषारोपण करने का या उसके ऊपर आरोप-प्रत्यारोप करने का भाव ही नहीं होता, किसी पर राग-द्वेष करने का प्रसंग ही नहीं बनता। सहज साम्यभाव जागृत होने लगता है। इसी साम्यभाव को जिनागम में धर्म कहा है।

जो जीव अपने भूतकाल की घटनाओं को इसी प्रकार जैनदर्शन के सिद्धांतों के आलोक में देखेगा, निश्चित ही उसके हृदय में जलती राग-द्वेष की ज्वाला अवश्य ही शान्त होगी। यही तत्त्वज्ञान का सुफल है।

जिसके राग-द्वेष कम नहीं होते, उन्हें विचार करना चाहिये कि ये धर्म के सिद्धांत कोरी परिभाषाओं तक सीमित न रह जाएं। जिसतरह दवा की मात्र चर्चा करने से रोग ठीक नहीं होता, उसी प्रकार मात्र तत्त्वचर्चाओं में सिमटकर न रहें, उसे चर्या का विषय बनायें।

पिताजी ने अपने संकल्प के अनुसार अपने सुखों की तिलांजलि देकर हमारे पढाने-लिखाने में पूरी ताकत लगा दी; परन्तु इसकारण हमारी 10-12 वर्ष से 18-20 वर्ष की उम्र तक उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिन कठिनाइयों से गुजरना पड़ा, उनकी कल्पना मात्र से रूह काँप जाती है। जब हमें पढाने हेतु बाहर भेजने का समय आया तभी माँ को रीढ में बोन टी.बी. की असाध्य बीमारी हो गई, ताऊजी दिवंगत हो गये। पिताजी अकेले असहाय रह गये। गाँव की साधन विहीन कठिन आजीविका, साधारण आर्थिक स्थिति, माँ के ऑपरेशन जैसे कठिन और खर्चीले उपचार की समस्या, हमारी पढाई का प्रश्न, घर में कोई भी दूसरा सहयोगी नहीं, घरेलू पशुपालन एवं उनकी देखभाल करने के कारण एक दिन को भी घर न छोड़ पाने की समस्या। इसप्रकार उन्हें सब ओर से मुसीबतों का पहाड़-सा खड़ा दिखा, फिर भी पिताजी ने हिम्मत नहीं हारी। वे हमारे पढाने के संकल्प पर अटल रहे।

सलाहकारों ने सलाह दी कि बड़े बेटे को सहयोग के लिये घर पर रख लो। यह सलाह दूरदर्शी पिताजी को तो पसन्द थी ही नहीं, मुझे भी उस छोटी सी उम्र में उनकी वह सलाह शूल-सी चुभती थी। उस छोटी सी उम्र में न जाने कहाँ से/कैसे मेरे मन में एक बात उपजी। मुझे लगता है वह सूझबूझ मेरी होनहार का ही कमाल था, अन्यथा उस उम्र में तो बच्चे पढने के बोझ से मुक्त होने में मजा मानते हैं।

मैंने पिताजी से गंभीर होकर कहा-''आप व्यापार बिलकुल बंद कर दो। अपने पास जो भी चल-अचल, चेतन-अचेतन धन संपत्ति है, उसे बेचकर माँ का इलाज कराओ और घर का खर्च चलाओ। हमें शास्त्री न्यायतीर्थ कर लेने दो। फिर सब ठीक हो जायेगा। पढाई छोड़ना मेरे मन को मंजूर नहीं है। मुझे तो पढाई छोड़ने की कल्पना मात्र से रोना आता है।'' इतना सुनते ही पिताजी की आँखों में आँसू आ गये। गद्गद् वाणी में वे बोले-''बेटा! मैंने एकबार सुना था- ''पूत सपूत तो क्यों धन संचय, पूत कपूत तो क्यों धन संचय''; अत: मेरा पक्का निश्चय है कि मैं तुम दोनों को ही पढाऊँगा, मुझसे जितना जो बनेगा, करूँगा, नहीं तो धंधा बंद करके तुम्हारी माँ का इलाज कराने और तुम्हें पढाने में ही अपनी पूरी शक्ति लगा दूंगा, परन्तु तुम्हारी पढाई पूरी कराऊँगा।'' मुझे आश्वस्त करते हुए उन्होंने आगे कहा-''तुम बिलकुल भी चिन्ता न करो, मन लगाकर पढना और अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना। हमें तुम्हारी उन्नति देखकर जो खुशी होगी, उसके सामने ये समस्याएं कुछ भी नहीं हैं।'' माँ ने अपनी पीड़ा की परवाह न करके पिताजी की बात का हृदय से समर्थन किया।

इसतरह पिताजी ने तो अपने कृत संकल्प को पूरा किया ही, हम भी अपनी भली होनहार के अनुसार पढाई में प्रतिवर्ष सफल होते रहे। माँ का उपचार भी चलता रहा। माँ स्वस्थ तो नहीं हुईं, पर हम सबके सौभाग्य से वे 25 वर्ष तक जीवित रहीं। बीमारी पूरी तरह ठीक न होने पर भी उसी हालत में उन्होंने हम लोगों के प्रवचन सुन-सुनकर जिनवाणी के रहस्य को समझ लिया था। वे क्रमबद्धपर्याय, पाँच समवाय, स्वतंत्र षट्कारक तथा वस्तु स्वातंत्र्य जैसे गूढ-गंभीर विषयों को आत्मसात करने में सफल हुईं। पिताजी ने तो विधिवत् क्रमश: सब ग्रंथों का स्वाध्याय करके शास्त्री तक की परीक्षाएं भी दी थीं और उन्होंने भी उपर्युक्त सभी विषयों को आत्मसात कर लिया था। फलस्वरूप दोनों का ही शेष जीवन आधि-व्याधि-उपाधि से रहित समाधि की भावना भाते हुए बीता। मरण भी सल्लेखनापूर्वक हुआ।

(क्रमश:)

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (4)

हम दु:खी तो हैं पर क्या हम यह भी जानते हैं कि दु:ख क्या है, हमारे दुखड़े क्या हैं?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

गत अंक में हमने पढा कि किस तरह हमारी ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही हमारी सुख-दु:ख की परिभाषाएं भी बदल जाती हैं, इसलिये सुखी होने के लिये सबसे पहले हमें यह निर्णय करना आवश्यक है कि ''मैं कौन हूँ'', इसी क्रम में यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि ''दु:ख क्या है''।

तो क्या हम यह भी नहीं जानते हैं कि दु:ख क्या है?

बात अटपटी जरूर लगती है पर यह है यथार्थ कि **हालांकि हम अनादिकाल से अनन्त दु:खी हैं, तथापि हम यह जानते ही नहीं कि दु:ख क्या है। हमें सुखी तो होना है पर हम यह भी नहीं जानते हैं कि सुख क्या है?**

एक बालक अपनी तकलीफ बयान करना नहीं जानता है, अपना दु:ख प्रकट करने के लिये उसकी एक ही भाषा है ''रुदन''। उसे तकलीफ कुछ भी क्यों न हो वह तो बस रोना शुरु कर देता है, अब यह निर्णय उसकी माता को करना है कि उसे क्या तकलीफ है। मात्र एक रुदन की भाषा के अनेकों अर्थ एक माता बहुत अच्छी तरह जानती है, वह जानती है कि कब उसे भूख लग रही है, कब नींद आ रही है, कब उसने पौटी कर ली है, कब उसे किसी से डर लग रहा है या कब उसके पेट में दर्द है। माता तदनुसार उसका उपाय करती है और बालक शान्त हो जाता है।

बालक हालांकि दु:खी है तथापि वह यह नहीं जानता है कि उसका दुखड़ा क्या है। वह अपना दु:ख बयान करने में असमर्थ है, ठीक उसी प्रकार दु:खी हम भी हैं पर हम भी सचमुच यह नहीं जानते हैं कि हमारा वास्तविक दुखड़ा क्या है। बस इसीलिये, हालांकि हम निरंतर अपने दु:ख दूर करने के प्रयासों में संलग्न रहते हैं, अनेकों उपाय करते हैं; पर हमारा दु:ख दूर नहीं होता है और अब तक हम सुखी नहीं हो पाये हैं।

उक्त बालक अपने दु:खों की परिभाषा नहीं जानते हुए भी अपने दु:ख दूर करने का उपाय कर लेता है; क्योंकि वह अपनी माता के संरक्षण में है, उसकी मां उसके दु:ख का निर्णय करके उसका उपचार करती है और उसका दु:ख दूर हो जाता है। हम अपनी मां (जिनवाणी माता) की शरण में गये ही नहीं तो हमारे दु:खों को कौन, कैसे पहिचाने, दु:खों को जाने-पहिचाने बिना हमारे दु:ख दूर कैसे हों?

मैं पूछता हूँ कि आखिर आपको क्या दु:ख है? सब कुछ तो है आपके पास – धन-दौलत, गाड़ी-बंगला, नौकर-चाकर, भरापूरा परिवार, अच्छी सेहत, अच्छा कारोबार, यश-कीर्ति, सत्ता और सब कुछ।

सामने से आवाज आती है कि 'अरे यह पूछो कि क्या दु:ख नहीं है', एक हो तो बतलाएं, यहाँ तो दु:खों और तकलीफों का एक सिलसिला है, कभी खत्म न होने वाला सिलसिला है। एक का उपचार करते हैं तो दूसरा उठ खड़ा होता है। यह तो तराजू पर जिंदा मेंढक तौलने जैसा काम है, एक को तराजू पर रखते हैं तब तक दूसरे दो फुदककर बाहर हो जाते हैं। आखिर कोई इनको तौले कैसे? इसी तरह किसी तरह एक दु:ख से छूटने का उपाय करते हैं तब तक चार नयी तकलीफ शुरु हो जाती है। उदाहरण के लिये –

''गर्मी पड़ रही है, महंगाई बढ रही है, कारोबार ठण्डा चल रहा है, चीन भारत पर चढ रहा है, तबीयत ठीक नहीं रहती है, बेटा कहना नहीं मानता है, पत्नी अब पहिले जैसी परवाह नहीं करती है, भूख नहीं लगती है, नींद नहीं आती है, वक्त कटता नहीं है आदि आदि।''

दु:खों की लिस्ट सुनकर मैं हैरान हो गया। अरे एक-दो हों तो कोई उपाय करें, इतने दुखड़े हैं कि इन मेंढकों को कोई कैसे तोले? अभी सुबह का नाश्ता निपटा नहीं कि लंच का समय हो जाता है, लंच निपटा नहीं कि थोड़ी ही देर में चाय की तलब लगने लगती है। एक का उपचार करते हैं तो दूसरी तकलीफ मुंह खोले खड़ी ही मिलती है, इनका क्या करें?

मैं आप सबसे निवेदन करता हूँ कि अपने उक्त सभी दु:ख-दर्दों को एक वाक्य में परिभाषित कर दें, यदि आप ऐसा कर सकें तो मैं आपको गारंटी देता हूँ कि मैं उन्हें दूर करने का शर्तिया उपाय आपको बतला दूंगा।

क्या आप ऐसा कर सकते हैं?

नहीं?

करना तो होगा, यदि दुखड़ों से मुक्त होना है तो यह तो करना ही होगा।

जब हम बीमार होते हैं तो डॉक्टर के पास जाते हैं, तब डॉक्टर भी तो यही करता है न! वह हमारी सारी तकलीफें सुनकर उन्हें एक बीमारी का नाम देता है और फिर उस एक बीमारी का इलाज करता है और हमारे सब दु:ख-दर्द दूर हो जाते हैं।

बीमार होने पर हमें कई प्रकार की तकलीफें होती हैं – बुखार आता है, बदन में दर्द होता है, कमजोरी महसूस होती है, सर्दी लगती है, खांसी आती है, जुकाम होता है, भूख नहीं लगती है, नींद नहीं आती है आदि आदि। तो हम क्या करें?

क्या बुखार उतारने के लिये एक दवाई ले लें, दर्द मिटाने के लिये पेनकिलर, कमजोरी दूर करने के लिये टॉनिक, खांसी के लिये कफ सिरप, नींद के लिये गोली आदि। क्या इसप्रकार प्रत्येक शिकायत के लिये पृथक्-पृथक् अनेक उपचार करने होंगे, क्या ऐसा करने से हमारी बीमारी दूर हो जायेगी?

नहीं, क्योंकि उक्त सभी तकलीफें बीमारी नहीं, बीमारी के लक्षण हैं। एक बीमारी के अनेक लक्षण। बीमारी अनेकों नहीं हैं, बीमारी तो एक है, हमें एक ही बीमारी के इन अनेक लक्षणों को देखकर एक बीमारी

परिभाषित करनी होगी, उस एक बीमारी का इलाज करना होगा और सारे दु:ख–दर्द दूर हो जायेंगे।

हम डॉक्टर के पास जाते हैं तो डॉक्टर हमारी सारी तकलीफें सुनकर निर्णय करता है कि हमें कौनसी बीमारी है और फिर उस एक बीमारी का इलाज करता है तो हमारी सभी तकलीफें, सारे दु:ख–दर्द दूर हो जाते हैं।

ठीक इसी प्रकार हमें दु:खों से समस्त प्रकट लक्षणों का विवेचन करके उनका एक कारण खोजना होगा, उस एक कारण को दूर करने पर हमारे सारे दु:ख स्वत: दूर हो जायेंगे। तो आइये हम इन्हें परिभाषित करने का प्रयास करें।

यदि मैं कहूं कि **हमारा दु:ख (बीमारी) यह है कि –**

''हम जैसा चाहते हैं वैसा नहीं होता है''

उक्त एक वाक्य में हमारे सारे के सारे दु:ख समाते हैं।

कैसे?

हम चाहते हैं कि गर्मी न पड़े (न लगे) पर गर्मी लगती है, हम चाहते हैं कि महंगाई न बढे पर वह बढती ही जाती है, हम चाहते हैं कि कारोबार में तेजी बनी रहे पर ऐसा नहीं होता है, हम चाहते हैं कि पड़ौसी देश हमारे अनुकूल व्यवहार करें पर वे तो टेढे चलते हैं, हम चाहते हैं कि हम स्वस्थ रहें पर हमारा स्वास्थ्य कभी भी ठीक नहीं रहता, हमारी चाहत है कि हमारे बच्चे हमेशा आज्ञाकारी बनें रहें पर ऐसा होता नहीं है...इत्यादि।

इस प्रकार हम पाते हैं कि **हमारे दु:ख अनेक नहीं हैं, वह एक ही है कि 'जगत का परिणमन हमारी इच्छा के अनुकूल नहीं होता है'** यही एक दु:ख हमारे समक्ष अनेक लक्षणों के रूप में प्रकट होता है। अब हमें बस इस एक रोग का, इस एक दर्द का इलाज करना है दु:ख के अनेक लक्षणों का नहीं। अब हमारा काम बहुत आसान हो गया है। तो आइये देखें कि इसका इलाज कैसे संभव है?

हमारी उक्त समस्या के दो समाधान संभव हैं, पहला तो यह कि सारा जगत हमारी इच्छा के अनुरूप परिणमित होने लगे और दूसरा यह कि हम जगत के परिणमन को यथावत स्वीकार कर लें।

कहिये आपको कौनसा विकल्प अच्छा लगता है?

चाहते तो सभी यह हैं कि सारे जगत का परिणमन हमारी इच्छा के अनुकूल हो, पर क्या ऐसा होना संभव है?

नहीं! कभी नहीं!!

चलिये फिर भी एक बार इस बात की संभावना तलाश लेने में क्या बुराई है?

सर्वसामान्य के साथ तो यह होना संभव ही नहीं है, इसलिये हम किसी सर्वशक्तिमान (ईश्वरीय शक्ति) के बारे में ही विचार करते हैं, यदि सारे जगत का परिणमन एक उनकी इच्छा के अनुकूल भी हो सका तो हम अपने बारे में भी ऐसा ही प्रयास करने की बात सोचेंगे।

जरा विचार कीजिये कि क्या कोई सर्वशक्तिमान भगवान, ईश्वर, अल्लाह या गॉड स्वयं अपनी इच्छा से या अपने किसी अनन्य भक्त की प्रार्थना पर जगत के सुनिश्चित परिणमन में कोई फेरफार कर सकता है?

आप क्या सोचते हैं, ऐसा कोई सर्वशक्तिमान (प्राणी) मात्र बाहुबल में शक्तिमान होगा या ज्ञानबल में भी सर्वज्ञ होगा?

जाहिर है कि **सर्वज्ञता के बिना किसी का सर्वशक्तिमान होना संभव ही नहीं है।**

आखिर कोई अज्ञानी या अल्पज्ञानी शक्तिमान कैसे हो सकता है, ज्ञान के अभाव में वह तो शक्तिहीन ही होगा। क्या शक्तिशाली खुफिया तंत्र के बिना कोई शासन कभी शक्तिशाली हो सकता है भला?

क्या उक्त सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ जगत के पूर्व सुनिश्चित परिणमन में किसी भी कारण से कोई भी छोटे से छोटा फेरफार भी कर सकता है?

नहीं!

क्योंकि **यदि उसने कोई भी परिवर्तन किया तो उसकी सर्वज्ञता खंडित हो जायेगी, क्योंकि उसने जैसा देखा–जाना था वैसा नहीं हुआ। यदि सर्वज्ञ ही नहीं रहा तो सर्वशक्तिमान कैसा? और यदि परिवर्तन नहीं कर सका तो फिर कैसा सर्वशक्तिमान जो अपनी इच्छा से छोटा–बड़ा कुछ भी न कर सके?**

इस प्रकार हम पाते हैं कि जगत के सुनिश्चित परिणमन में कोई भी परिवर्तन करना किसी के बूते की बात नहीं है, **यदि कोई कथित सर्वशक्तिमान ही ऐसा नहीं कर सकता है तो कोई अन्य (हम) ऐसा कैसे कर सकेगा?**

एक बात और ! **सुखी तो सबको होना है न, सिर्फ हमें नहीं और इच्छाएं तो सभी की अलग–अलग और एक–दूसरे के विपरीत हैं, किसी एक के अनुकूल परिणमन निश्चित तौर पर अन्य अनेकों के प्रतिकूल ही होगा, तब सभी कैसे सुखी हो सकेंगे।**

सभी तो क्या एक भी सुखी नहीं हो सकेगा, क्योंकि किसी एक मामले में परिणाम हमारे अनुकूल आयेगा और अन्य मामले में किसी अन्य के अनुकूल, **इसप्रकार ऐसा कोई नहीं होगा जिसके सामने कोई प्रतिकूलता न हो, इसप्रकार कोई भी सम्पूर्ण सुखी नहीं हो सकेगा। अपूर्णता तो अपने आपमें सबसे बड़ा दु:ख है न!**

अब हमारे पास मात्र दूसरा (एक ही) विकल्प शेष रहता है कि **''जगत के परिणमन को (बिना मीनमेख, बिना राग–द्वेष, तटस्थ भाव से) जैसे का तैसा स्वीकार कर लें'' तब भला हमें कौन दु:खी कर सकेगा?**

इसप्रकार हम पाते हैं कि **संसार में मात्र एक दु:ख है, ''कर्त्ताबुद्धि'' जगत के परिणमन में फेरफार करने की इच्छा और सुखी होने का एकमात्र उपाय है जगत के परिणमन को सहज स्वीकार कर लेना। (क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

7

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अहो! इस पुरुष के **शरीर के पुत्र के आत्मा!** तू इस पुरुष के आत्मा का जन्य (उत्पन्न किया गया पुत्र) नहीं है – ऐसा तुम निश्चय से जानो।

इसलिए तुम इस आत्मा को छोड़ो। जिसे ज्ञानज्योति प्रगट हुई है – ऐसा यह आत्मा आज अपने **आत्मारूपी अनादि-जन्य (पुत्र) के पास जा रहा है।**

इसप्रकार यह दीक्षार्थी आत्मा, माता-पिता आदि बड़े-बूढ़ों से और स्त्री-पुत्रादि से स्वयं को छुड़ाता है।[१]''

इतना विशेष है कि प्रवचनसार में मुनिदीक्षा लेनेवाला अपने परिजनों से विदा लेता है और पण्डित गुमानीरामजी के मृत्यु महोत्सव में सल्लेखना लेने वाला अपने परिजनों से स्वयं को छुड़ाता है।

पण्डित गुमानीरामजी भी माता-पिता, स्त्री-पुत्रादि को इसीप्रकार संबोधित करते हैं; जो मूलतः पठनीय है।

उक्त मृत्यु महोत्सव के कतिपय महत्त्वपूर्ण अंश इसप्रकार हैं –

''समाधि नाम निःकषाय का है, शान्त परिणामों का है, कषाय रहित शांत परिणामों से मरण होना समाधिमरण है।[२]

वह (सम्यग्दृष्टि) अपने निज स्वरूप को वीतराग ज्ञाता-दृष्टा, पर द्रव्य से भिन्न, शाश्वत और अविनाशी जानता है और परद्रव्य को क्षणभंगुर, अशाश्वत, अपने स्वभाव से भलीभाँति भिन्न जानता है। इसलिये सम्यक्ज्ञानी मरण से कैसे डरें? वह ज्ञानी पुरुष मरण के समय इसप्रकार की भावना व विचार करता है –

मुझे ऐसे चिन्ह दिखाई देने लगे हैं जिनसे मालूम होता है कि अब इस शरीर की आयु थोड़ी है, इसलिये मुझे सावधान होना उचित है, इसमें (देर) विलम्ब करना उचित नहीं है।

अब इसके नाश का समय आ गया है। इस शरीर की आयु तुच्छ रह गई है और उसमें भी प्रति समय क्षण-क्षण कम हुआ जाता है; किन्तु मैं ज्ञाता दृष्टा हुआ इसके (शरीर का) नाश को देख रहा हूँ।

मैं इसका पड़ौसी हूँ न कि कर्त्ता या स्वामी। मैं देखता हूँ कि इस शरीर की आयु कैसे पूर्ण होती है और कैसे इसका (शरीर का) नाश होता है, यहाँ मैं **तमाशगीर की तरह** देख रहा हूँ।

देखो! इस अद्भुत चैतन्य स्वरूप की महिमा! उसके ज्ञानस्वभाव में समस्त ज्ञेय पदार्थ स्वयमेव झलकते हैं; किन्तु वह स्वयं ज्ञेयरूप नहीं परिणमता है और उस झलकने में (जानने में) विकल्प का अंश भी नहीं है। इसलिये उसके निर्विकल्प, अतीन्द्रिय, अनुपम, बाधा रहित और अखण्ड सुख उत्पन्न होता है। ऐसा सुख संसार में नहीं है, संसार में तो दुःख ही है; अज्ञानी जीव इस दुःख में भी सुख का अनुमान करते हैं, किन्तु वह सच्चा सुख नहीं है।[१]

'चैतन्यरूप कैसा है?' वह आकाश के समान निर्मल है, आकाश में किसी प्रकार का विकार नहीं है। बिल्कुल वह स्वच्छ निर्मल है।

यदि कोई आकाश को तलवार से तोड़ना, काटना चाहे या अग्नि से जलाना चाहे या पानी से गलाना चाहे तो वह आकाश कैसे तोड़ा, काटा जावे या जले या गले? उसका बिल्कुल नाश नहीं हो सकता। यदि कोई आकाश को पकड़ना या तोड़ना चाहे तो वह पकड़ा या तोड़ा नहीं जा सकता।

वैसे ही मैं भी **आकाश की तरह अमूर्तिक, निर्विकार, पूर्ण निर्मलता का पिण्ड हूँ।** मेरा नाश किस प्रकार हो? किसी भी प्रकार से नहीं हो, यह नियम है।

यदि आकाश का नाश हो तो मेरा भी हो, ऐसा जानना। किन्तु आकाश के और मेरे स्वभाव में इतना विशेष अन्तर है कि आकाश तो जड़ अमूर्तिक पदार्थ है और मैं चैतन्य अमूर्तिक पदार्थ हूँ। (क्रमशः)

---

१. प्रवचनसार, गाथा २०२ और टीका

२. मृत्यु महोत्सव, पृष्ठ-७३

१. मृत्यु महोत्सव, पृष्ठ-७७

खुशखबरी ! **भव्य शुभारम्भ!!**

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

आचार्य समन्तभद्र

भव्य शुभारम्भ

(सोमवार, 2 अप्रैल 2018)

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष है कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा विगत 11 वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में संलग्न है और 2008 से शास्त्री अध्ययन हेतु आचार्य धरसेन महाविद्यालय का संचालन कर रहा है, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ही लौकिक के साथ धार्मिक शिक्षण हेतु **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** का मंगल आरम्भ दिनांक 2 अप्रैल 2018 से हो रहा है, जिसमें 8वीं कक्षा से प्रवेश दिया जायेगा।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.सी. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं – तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट–बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 24 छात्रों को प्रवेश।

नोट :– प्रवेश फार्म 15 नवम्बर से उपलब्ध होंगे। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

श्री प्रेमचंद बजाज (अध्यक्ष) पण्डित रतन चौधरी (निदेशक) 8104597337

संपर्क सूत्र :–

पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) 9785643203,
पण्डित सौरभ शास्त्री (अधीक्षक) 7891563353, पण्डित अभिनय शास्त्री (सह–अधीक्षक) 7737979912

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

ब्र. अभिनन्दनजी द्वारा तत्त्वप्रचार

ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा जुलाई, अगस्त व सितम्बर माह में नागपुर, ललितपुर, मऊ, रानीपुर, ग्वालियर, करतल, सोनागिर आदि 75 स्थानों के मंदिरों का निरीक्षण किया गया। सभी स्थानों पर प्रात: एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक व समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

वैराग्य समाचार

(1) पूना (महा.) निवासी श्री रसिकलालजी धारीवाल का दिनांक 24 अक्टूबर को 78 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप जैन समाज के भामाशाह थे, समाज के जो भी लोग उनके पास सहयोग के लिये जाते थे, वे उनकी भरपूर सहायता करते थे। मुमुक्षु समाज के अनेक संकुलों के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। टोडरमल स्मारक भवन में भी वे पधारे थे और यहाँ चलने वाली गतिविधियों का अवलोकन करके अत्यंत प्रसन्न हुये थे। आपने अनेक शाश्वत व प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार तथा विकास कार्य में बहुत योगदान दिया। ज्ञातव्य है कि आप अजितजी जैन बड़ौदा वालों के बहनोई थे। आपके निधनसे एक अपूरणीय क्षति हुई है।

(2) कोटा (राज.) निवासी श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी श्री बालचंदजी पटवारी का 20 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप धरसेन महाविद्यालय के छात्र अभिलाष शास्त्री की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) टोकर-उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती बसंतीदेवी जैन धर्मपत्नी श्री अमरकुमारजी जैन का दिनांक 24 सितम्बर को 65 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर की बड़ी भाभी एवं वर्तमान में अध्ययनरत श्री हितंकर जैन की ताईजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) भिण्ड (म.प्र.) निवासी श्रीमती सरलादेवी जैन धर्मपत्नी श्री नाथूराम जैन का दिनांक 20 अक्टूबर को 77 वर्ष की आयु में सामायिक विधिपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं, गुरुदेवश्री के प्रवचन नियमित सुना करती थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक राजीव शास्त्री भिण्ड की माताजी एवं अपूर्व जैन की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 501 रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

आगामी कार्यक्रम

इन्दौर (म.प्र.) स्थित मोदीजी की नसियां में दिनांक 23 से 31 दिसम्बर 2017 तक गोम्मटसार जीवकाण्ड का तृतीय शिविर आयोजित होगा। शिविर में तीनों समय 2-2 घंटे की कक्षायें आयोजित होगी। बाहर के साधर्मियों हेतु आवास एवं भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। शिविर में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन कराने की अन्तिम तिथि 15 नवम्बर है। **संपर्क सूत्र -** 9479445253 (श्रीमती प्रियंका गोधा), 7509428981 (कु.शिखा शाह), 9424414796 (विमलचंद जैन)।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

14 से 19 नव. 2017	झालरापाटन	पंचकल्याणक
24 से 29 नव. 2017	नागपुर	पंचकल्याणक
2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
11 से 15 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक
17 व 18 फर.-2018	श्रवणबेलगोला	महामस्तकाभिषेक
23 से 25 फर.-2018	जयपुर	वार्षिकोत्सव
27 फर.से 1 मार्च-2018	कोटा (मुमुक्षु आश्रम)	वार्षिक मेला (होली)

देखो, तत्त्वविचार की महिमा !

देखो, तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचार रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरण आदि करे, उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इसके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है। **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260**

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com